कक्षा 12 हिंदी

हरिशंकर परसाई

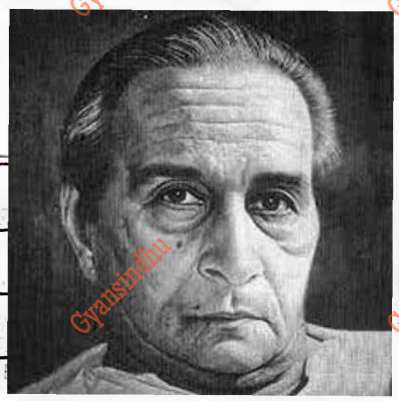

साहित्यिक परिचय

हरिशंकर परसाई का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जनपद में इटारसी के निकट स्थित जमानी नामक ग्राम में 22 अगस्त 1924 ई. को हुआ था। इन्होंने जबलपुर में 'वसुधा' नामक पत्रिका के सम्पादन एवं प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ किया, लेकिन अर्थ के अभाव के कारण यह बन्द करना पड़ा। इनके निबन्ध और व्यंग्य समसामयिक पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते थे, लेकिन इन्होंने नियमित रूप से धर्मयुग और साप्ताहिक हिन्दुस्तान के लिए अपनी रचनाएँ लिखीं। 10 अगस्त 1995 ई. को इनका स्वर्गवास हो गया।

हिन्दी गद्य - साहित्य के व्यंग्यकारों में हरिशंकर परसाई अग्रगण्य थे। इनके व्यंग्य - विषय सामाजिक एवं राजनीतिक रहे। व्यंग्य के अतिरिक्त इन्होंने साहित्य की अन्य विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलाई थी, परन्तु इनकी प्रसिद्धि व्यंग्यकार के रूप में ही हुई।

हरिशंकर परसाई जी की पहली रचना "स्वर्ग से नरक जहाँ तक" है, जो कि मई, 1948 में प्रहरी में प्रकाशित हुई थी, जिसमें उन्होंने धार्मिक पाखंड और अंधविश्वास के खिलाफ पहली बार जमकर लिखा था। धार्मिक खोखला पाखंड उनके लेखन का पहला प्रिय विषय था। हरिशंकर परसाई जी को "विकलांग श्रद्धा का दौर" रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वैसे हरिशंकर परसाई कार्लमार्क्स से अधिक प्रभावित थे। परसाई जी की प्रमुख रचनाओं में "सदाचार का

ताबीज" प्रसिद्ध रचनाओं में से एक थी जिसमें रिश्वत लेने देने के मनोविज्ञान को उन्होंने प्रमुखता के साथ उकेरा है।

कृतियां

- कहानी संग्रह :- हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे
- उपन्यास :- रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज
- निबन्ध संग्रह :- तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेईमान की परत, पगडंडियों का जमाना, सदाचार ताबीज, शिकायत मुझे भी है, और अन्त में, तिरछी रेखाएँ, ठिठुरता गणतन्त्र, विकलांग श्रद्धा का दौर, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ।
- सम्पादन :- वसुधा (पत्रिका)